रात्रा क्लास ओम शान्ती 7-1-1967

सतयुग में सदैव बहार ही मौसम होती है। वहां [illegible] होता ही नही है। बहुत थोड़े होते हैं नां। तो नदियों के किनारों पर मकान होते हैं। गर्मी होती ही नही जो कि पहाड़ों आद पर जाना पड़े। यह दिलवाला मन्दिर पूरा 5% याद गा[illegible] वष्ड़ है नां। आगे कब आबू में बाबा नही आया। अभी ऐसी जगह आये हैं जहां हमारा पूरा यादगार है। मनुष्य समझते हैं स्वर्ग कोई ऊपर में है। दिलवाला में भी देवताओं की राजधानी ऊपर छत में बना दी है। वहां फिर यह मन्दिर भक्ति आद कुछ भी नही रहेगी। जो भी त्यौहार हैं सब इसी समय के यादगार हैं। सब सीताओं को भक्तों को रावण की जेल से मुक्त करते हैं। सारी दुनिया को ही रावण राज्य से लिब्रेट किया जाता है। रक्षा बन्धनआद सब अभी के हैं। दिवाली और होली, ज्ञान और विज्ञान। विज्ञान माना योग। ज्ञान माना स्वदर्शन चक्रधारी बनना। इस समय का ही यादगार भक्ति मार्ग में चला है। तुमको अब ज्ञान मिल रहा है। पुरुषार्थ कर फिर राजराजेश्वर बनेंगे। यह राज योग है नां। बाप राजाओं का राजा बनाते हैं। वो ही देवतायें फिर पतित राजायें भी बनते हैं। यह बातें शास्त्रों में नही हैं। रावण राज्य में राजाई मिलती है धन दान करने से। भारत जैसा दानी कोई होता नही है। तुम सब कुछ बाप को दान करते हो। बाप क्या करेंगे। पुरी-2 तलाब हो जाता है, राजधानी स्थापन हो रही है। शाहुकारों का बाबा स्वीकार नही करेंगे। हम लेकर क्या करेंगे? जाकर सैन्टर खोलो। कोई करोड़पति 10लाख देते हैं। 100 वाले एक रुपया देते हैं। वो तो इकुल होता है। इनका नाम ही है गरीब निवाज़। वो है झूठी कमाई यह है सच्ची कमाई। यह ही साथ चलने वाली है। बाबा ने गृह में विनाश सा० भी किया, राजाई सा० भी किया। बाप की प्रवेशता भी तो सब कुछ इन माताओं को दे दिया, माताओं को ट्रस्टी बना दिया। फिर बच्चे कहने लगे हमको रुपये दो। हम पवित्र नही रहेंगे। स्त्री ने कहा हम पवित्र रहेंगी। तो उनको कहा जहां चाहो चले जाओ। हम तो सब कुछ दे चुके हैं। ईश्वरिय कार्य में लगा कर फिर आसुरी कार्य में नही लगा सकते हैं। तो यह सब ड्रामा में नूंध है। जो कुछ ड्रामा में हो चुका है सो फिर रिपीट जरूर होगा। इसको कहा जाता है अनादी अविनाशी ड्रामा। इनका राईट हैंड है धर्मराज़। कुछ भी अवज्ञा करें तो बड़ा दण्ड मिलेगा। इस लिये कोई अवज्ञा नही करनी चाहिये। सतगुरू का निन्दक ठौर नां पावें। ठौर तो बाप देते हैं। उन गुरुओं ने फिर अपने लिये यह कह दी है। रक देते गुरु [illegible] ठौर नही। गुरु तो बहुत हैं। रस्ता बताने वाले तो एक ही सतबाप सतटीचर सतगुरू है। मनुष्य कब रस्ता बता नही सकते। सदगती कर नही सकते। मनुष्य कब रस्ता बता नही सकते। रचना को रचना से वर्सा नही मिलता है। बाप ही बच्चों को वर्सा देते हैं। यह है बेहद का बाप। यह है प्रवृती मार्ग। सन्यासीयों का है निवृती मार्ग। उनका है हद का सन्यास हमारा है बेहद का सन्यास। हम नगें आये तो फिर नगें जाना है। परन्तु पावन जरूर बनना है। ओम शान्ती

13-1-67: रात्री क्लासः — जहां विश्व की बादशाही 21जन्मों के लिये मिल सकती है तो यहां क्या है जो नही मिल सकता है? एक बाप जिसके हजारों बच्चे [illegible] करोड़ों हो जाने वाले हैं, तो बाप के पास कुछ कमी नही हो सकती है। मकान बनते हैं, शाहुकार अथवा गरीब आकर रह सकते हैं। यहां फिर भी अच्छा है। बाहर में तो राशण आद लगी पड़ी है। अनाज क्या मिलता है। किचरा ऐसे लगा पड़ा है जो बात मत पूछो। विचारे पुरुषार्थ तो बहुत करते हैं। नैचरल बरसात नही मिलती है तो क्या करेंगे। कोई समय ऐसा भी होगा जो कहीं से भी कुछ भी आ नही सकेगा। यह सब कुछ होने का है। फिर भी यहां तो बहुत आराम से बैठे हो। भले बाहर जाकर लखपति करोड़पति बन गये हैं। परन्तु भविष्य के लिये यहां कितनी कमाई होती है। इसके लिये ही कहा जाता है सोर्स आफ इनकम। डाक्टर, बैरिस्टर लोग क्या कमाते हैं? यहां फिर है रूहानी पढ़ाई ड्रामा के अनुसार पढ़ते भी नम्बरवार ही हैं। कोई-2को पढ़ाई में ग्रहचारी भी बैठ जाती है। किसी को राहू की दशा बैठ जाती है। अगर श्रीमत पर चलते रहे तो तो अहोसौभाग्य। इससे ऊंच सौभाग्य होता नही है। भ्रष्ट से श्रेष्ठ बनते हैं। कहां तो भले बन्दर हैं। कुछ भी नही समझते हैं। बाबा बच्चों में भी है रत्नों को समझा समझाते।

सब्जा फेंक देते है। भक्ति मार्गवाली कान की बातें सुनना नहीं चाहते है। तुम फिर भक्ति मार्ग की बातें सुनना नही चाहते हो। सी नो ईवल, हेयर नो ईवल का चित्र पड़ा है नां। ज्ञान सें फिलाली रोशनी मिल जाती है। भक्ति सें है अंधेरा। बाप आते है भारत को हेवन बनानें। बच्चों को भी उतना उमंग होना चाहिये। यह कमाई कितनी सहज है। यह है ही सहज राजयोग। बाप की मत पर चलना है। मूल बात है यह। उसमें भी नम्बरवार मिलती है मत मनमनाभव। बाप नें सिमृती दिलाई है मुझें याद करनें सें तुम तमोप्रधान सें सतोप्रधान बन जावोगें। अब कोई पाप नही करना है। किसीको भी देख, दुःख नही देना है। जितना हो सकें सवेरे शाम याद का अभ्यास रखना है। कम कार डे, दिल यार डे। कर्म करते रहो। हठ योग कर्म सन्यास तो है नही। मेहनत है। माया योग लगाने नही देती है। धीरे-2सब पुरूषार्थ कर रहे है। ओम (ता)

15-1-1967: रात्री क्लासः- बाबा का ख्याल हो रहा था कि हमारी पाण्डव गवर्मेन्ट की भी सटैम्प क्यों नही होनी चाहिये। अब तो शिव जयन्ती भी आ रही है। हमारे लैटर हैड पर जो कोट आफ आरमस (त्रिमूर्ती) है ऐसी सटैम्पस बना कर सब परलगा देवें। आपीनियन की किताब बनेंगी। उसके ऊपर भी हमारा सटैम्प लगा रहे। नीचें में सारे अक्षर हो ब्रहमा दवारा सतयुगी सृष्टी की स्थापना शंकर दवारा इसका विनाश, और विष्णु दवारा दैवी सृष्टी की पालना। जास्ती अक्षर नही। सटैम्प लगा देंगें फिर वो लोग क्या कर सकते है। जैसे आगें कहा था कि यूनिवरसिटी अक्षर मत लिखो= तो हमने भी निकाल दिया था। अब तो हम रैड्बड्-टाईजुकैन्ट जोर सें करते है। त्रिमूर्ती शिव जयन्ती ही मनानी चाहिये। सिर्फ निराकार शिव की जयन्ती तो सिद्ध नही होगी कि जब तक ब्रहमा विष्णु शंकर नही बनेंगें। त्रिमूर्ती तो सबही चित्रों में लगा हुआ हैं। कहते भी रहते है शिव परमपिता परमात्मा ब्रहमा शरीर दवारा प्रवेश हो सतयुगी राजाई सृष्टी स्थापना करवा रहे है। तो उनकी स्टैम्प बनानी चाहिये। जो अच्छा काम करकें जाते है उनकी सटैम्प बनाते है। यह तो बिलकुल ही नामी ग्रामी है जो कल्प-2भारत को हेवन बनाते हैं। देहली में प्रदर्शनी कमेटी राय कर रही है कि कैसे मनावे इस त्रिमूर्ती कें सम्झानी तो बड़ी अच्छी है। प्रदर्शनी के चित्र भी जास्ती बनें हुये हो तो जो मुख्य सैन्टरस वाले है वो अपनी-2प्रदर्शनी कर सकें। फिर जिनके पास जितने भी हैड्स तैयार होंगें वो आपही आपस में सार्विस करेंगें। पता पड़ जावेगा सम्झानें वाले ब्राहम्ण बनें है कि नही। जिनको सर्विस का शौंक होगा वो कोई नां कोई राय जरूर निकालेंगें। नही तो बाप दादा समझेंगें कि सब टट्टू बच्चे है। चौबें में भी कहीं प्रोजेक्टर शौकहीं प्रदर्शनी होनी चाहिये। विनाश कालें विप्रीत बुधी वाला चित्र भी तुम्हारे पास है। सम्झानी तो बड़ी अच्छी है। सिद्ध हो जावेगा शिव बाबा प्रजापिता ब्रहमा कुमार कुमारियों दवारा कल्प-2 भारत पर दैवी स्वराज्य स्थापन करते है। सर्विस कुल बच्चे बहुत युक्तियां निकालतें रहेंगें वो चित्र बनाते रहेंगें। भगवानो वाच्य यह राज योग और होली और दैवी स्वराज्य आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। यह भी लिखना चाहिये शिव का 30वी बर्थ डे है।अब देखें कोई अच्छी-2 राय निकालते हैं। अन्दरूनी प्यार और बाहर का प्यार पारलौकिक बाप भी जानते हैं। लौकिक बाप भी जानते है। बाप के बच्चे तो सब हैं परन्तु उनमें सें भी कोई काम के है कोई निकमें है। जो काम करनें वाले होगें वो ही ऊंचा पद पावेंगें। निकमें भी होवेंगें। आगरा वाला महेन्द्र बच्चा अच्छा काम कर रहे है।अच्छी मेहनत कर रहे हैं,की है। जैसे जबलपुर वाला ओम प्रकाश इसनें भी अच्छी ही मेहनत की है।दोनों गोप है सैंटर्स सम्भालतें है। प्रदर्शनी भी करते है। ऐसा कोई गोप दूसरा है नही। यह है भी नये। पुराने तो सोये हुये हैं। बहुत कुमारियां भी अच्छी ही सर्विस करती है। कानपुर में भोला माता नें भी अच्छी ही मेहनत की है। देहली साउथ ऐक्सटैन्शन पर रहने वाली बच्ची भी अच्छी है। योगनी अच्छी पढी लिखी है सर्विसबुल है। ऐम्बैसडर इसको बनाने का विचार हो रहा है। यह सब तरफ जाकर सर्विस कर सब देख करें। यह कोई भी आफीसिस पास जावें तो बहुत काम निकाल सकती है। ऐसी रखजो और कोई हमारे पास है नही। लक्ष्मी बच्ची भी अच्छी है। बहुत अच्छा काम कर रही है। अच्छा।गुड नाईट